क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर. ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइट: kriyayoga-yogisatyam.org

क्रम संख्या .....

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है
दिनॉक : 29/1/2013

प्रकाशनार्थ

29 जनवरी 2013 को महाकुंभ क्षेत्र में मोरी रोड पर क्रियायोग के द्वितीय शिविर का उद्घाटन समारोह

29 जनवरी 2013 इलाहाबाद । ''मनुष्य जगने, सोने और स्वप्न देखने की अलौकिक क्रिया संपादित करता है । इन क्रियाओं से भलीभाँति परिचित होने के कारण मनुष्य सोने, जगने और स्वप्न देखने की अवस्थाओं में सुख दुःख के भिन्न भिन्न स्वरूपों की अनुभूति करता है । मनुष्य को मृत्यु से भय लगता है क्योंकि मरने के पश्चात् वह पूर्व स्थिति में नहीं आ पाता है । क्रियायोग ध्यान में हम शरीर के कोशिकाओं, इन्द्रियों, मन व बुद्धि को पूर्णतया आवश्यकता के अनुसार निष्क्रिय करके पुनः सक्रिय कर देते हैं । दूसरे शब्दों में हम शरीर को मृत्यु की अवस्था में ला देते हैं और स्वेच्छा से उसे पुनः पहले की तरह जीवित कर देते हैं । इस ज्ञान के बाद मनुष्य को मृत्यु से भय समाप्त हो जाता है । मृत्यु अवस्था को प्रकट कर लेने की स्थिति को सविकल्प समाधि कहते हैं । समाधि के टूटने पर फिर मनुष्य दुबारा जागृत अवस्था में आ जाता है । सविकल्प समाधि के समय इन्द्रिय, मन, बुद्धि निष्क्रिय अवस्था में आ जाते हैं और इन्ट्यूशन जगकर सक्रिय हो जाता है । सामान्य रूप से सविकल्प समाधि की अनुभूति के लिए व्याधिरहित दस लाख वर्षों की आवश्यकता होती है । क्रियायोग ध्यान से इस लम्बी अवधि को घटाकर सीमित कर दिया जाता है । क्रियायोग ध्यान में अनन्त भक्ति होने पर सविकल्प समाधि की स्थिति की प्राप्ति 14 वर्षों में संभव है ।'' उक्त विचार अन्तर्राष्ट्रीय संत स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने मुक्ति मार्ग स्थित क्रियायोग शिविर के उद्घाटन समारोह के अवसर पर व्यक्त किया ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि भारत द्वारा विश्व को क्रियायोग विज्ञान प्रदान करने का गौरव प्राप्त है । क्रियायोग विज्ञान सभी विज्ञानों का विज्ञान व स्वयं में एक पूर्ण शिक्षा है । इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि के रूप में योजनायोग उ0प्र0 के उपाध्यक्ष श्री नवीन चन्द्र बाजपेई जी ने कहा कि क्रियायोग विज्ञान एक

सुनिश्चित आध्यात्मिक पूर्ण विज्ञान है जिसका उद्घाटन करके मैं गौरवान्वित हो रहा हूँ । क्रियायोग ध्यान का दीप देश के प्रत्येक घरों में जलाने के पावन संकल्प के प्रति स्वामी जी के दिव्य संकल्प को मैं अपनी शुभकामना व्यक्त करता हूँ और हम इसके लिए सदैव पूर्ण सहयोग करेंगे और कराएँगे । मुख्य अतिथि महोदय जी ने आगे कहा कि क्रियायोग सर्वश्रेष्ट एवं सर्वसुलभ मार्ग है क्योंकि मानव को सत्य की अनुभूति में लगे दस लाख वर्ष की अवधि को घटाकर अल्प कर देता है इसलिए क्रियायोग ध्यान को जेट प्लेन विधि से आत्मज्ञान की प्राप्ति का मार्ग कहा गया है ।

क्रियायोग शिविर के उद्घाटन समारोह का शुभारम्भ स्वामी श्री योगी सत्यम् जी के द्वारा मुख्य अतिथि श्री एन0सी0 वाजपेयी व उनकी श्रीमती के भ्रूमध्य पूजन तथा स्वामी श्री योगी सत्यम् व श्री एन0सी0 बाजपेयी के दीप प्रज्जवलन के साथ प्रारम्भ हुआ । इस अवसर पर स्वामी श्री योगी सत्यम् जी के द्वारा मुख्य अतिथि जी को शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया । कार्यक्रम में क्रियायोग समुदाय के समस्त स्वामीगण के साथ क्रियायोग के सभी भक्तों ने संकल्प लिया कि हम क्रियायोग का अभ्यास करेंगे और इसका अभ्यास करने में अपनी पूर्ण भक्ति अर्पित करेंगे क्योंकि सभी ने इस मत की पुष्टि की कि क्रियायोग ध्यान में आंतरिक और बाह्य हिंसा का समापन होता है, इसलिए सभी ने क्रियायोग ध्यान का दीप घर घर में जलाने के पावन कर्म में सहयोग करने का संकल्प लिया ।

क्रियायोग शिविर के उद्घाटन समारोह के अवसर पर भारत के अनेक प्रदेशों से आये भक्तों के साथ-साथ युनाइटेड ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूट के श्री सतपाल गुलाटी व श्री जगदीश गुलाटी और यू0एस0ए0, कनॉडा, ब्राजील, आस्ट्रेलिया, रूस, गयाना, सिंगापुर, पोलैण्ड आदि देशों से आये हुए साधकों, विद्यार्थियों ने भाग लिया और सभी लोगों ने अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त किया ।

- योगमाता